मुझे ढूँढ़ लिया

सिद्धयोगियों द्वारा बताए गए कृतज्ञता के उनके अनुभव

मैं जब सात वर्ष का था, मेरे हाथ पर एक बहुत गहरी चोट लगी। जिस दिन चोट लगी थी, उस रात को मेरे हाथ में असहनीय दर्द हो रहा था। मैं बस इतना ही कर सकता था कि अपने बिस्तर पर बैठकर भगवान से प्रार्थना करूँ कि वे मुझे इस दर्द को सहने की शक्ति दें।

गहरी आर्तता से प्रार्थना करने के कई घण्टों बाद मुझे एक बाँसुरी की ध्वनि सुनाई दी। मन्द-मन्द-सी वह ध्वनि गहन और सुरीली थी। अपने कमरे में खड़ा, मैं यह जानने का प्रयास करने लगा कि आख़िर वह ध्वनि आ कहाँ से रही है, परन्तु ऐसा लग रहा था मानो वह चारों ओर से प्रस्फुटित हो रही है। उसके बाद, रातभर मैं अपने बिस्तर के किनारे बैठा रहा; मैं उस ध्वनि से इतना मन्त्रमुग्ध हो गया था कि अपने हाथ के दर्द को पूरी तरह से भूल गया।

इस घटना के बाद दो महत्त्वपूर्ण बातें हुईं। पहली यह कि मेरा हाथ पूर्णतः ठीक हो गया। और दूसरी जो और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात थी, वह यह कि मुझमें ईश्वर को जानने की ज्वलन्त इच्छा जाग्रत हुई। मुझे यह तो नहीं पता कि उस रात बाँसुरी की ध्वनि का क्या हुआ, परन्तु मैं यह ज़रूर जान गया कि उसका सम्बन्ध ईश्वर से की हुई मेरी प्रार्थनाओं से था। मेरे मन में प्रश्न बहुत सारे थे, परन्तु उत्तर बहुत थोड़े-से थे। अगले पन्द्रह वर्षों के दौरान मैंने ईश्वर की खोज में अनेक धार्मिक पन्थों व दर्शनों का अन्वेषण किया। उनमें से अनेक पन्थ सान्त्वना देने वाले तो थे, पर अपने हृदय में मैं यह जानता था कि ईश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव पाना बिलकुल सम्भव है।

सन् १९८२ में अपने कॉलेज के अन्तिम वर्ष के दौरान मुझे अपनी एक मित्र का फ़ोन आया। उसने कहा, "मैं अभी-अभी ध्यान सिखाने वाले एक गुरु से मिलकर घर लौटी हूँ। तुम्हें भी न्यूयॉर्क जाकर उनसे मिलना चाहिए।" मैंने उससे कहा कि फ़िलहाल वहाँ जाना मेरे लिए सम्भव नहीं है। इस पर उसने बड़ी सरलता से कहा, "ठीक है; तुम बस इन शब्दों को लिख लो।" उसने धीरे-धीरे मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' और 'स्वामी मुक्तानन्द' नाम का उच्चारण किया। मैंने उन शब्दों को लिख लिया, विनम्रता से फ़ोन काटकर अपनी इन्जीनीयरिंग की पढ़ाई करने में लग गया।

उस रात जब मैं सोने गया तो मुझे एक स्वप्न आया। मैं सड़क के किनारे खड़ा होकर यह समझने का प्रयत्न कर रहा था कि ईश्वर को जानने की अपनी इस ज्वलन्त इच्छा को कैसे पूर्ण करूँ। अपने हृदय की

इस पीड़ा को मिटाने का कोई तो उपाय होगा जिसने इस धरती पर मेरे जीवन के बाईस वर्षों में से पन्द्रह वर्ष ले लिए थे। थोड़ी दूर, मैंने देखा की एक गोल्फ़कार्ट [छोटी-सी गाड़ी] सामने से मेरी ही तरफ़ आ रही है; उसके ऊपर एक नीला प्रकाश चमक रहा था। नज़दीक आने पर दिखा कि एक भारतीय व्यक्ति उस गाड़ी को चला रहे थे। मेरे सामने रुककर उन्होंने कहा, "आओ, अन्दर बैठो।" मैंने कहा, "मैं तो कहीं जा ही नहीं रहा हूँ।" वे बोले, "मैं जानता हूँ; इसीलिए तो तुम्हें अन्दर आ जाना चाहिए!" मैं बैठ गया और उन्होंने गाड़ी आगे बढ़ाई। कुछ देर शान्त रहने के बाद वे बोले, "मैं स्वामी मुक्तानन्द हूँ। तुम्हें अभी-अभी सिद्धों के पथ पर दीक्षा प्रदान की गई है। यह एक परिपूर्ण पथ है। यह सर्वश्रेष्ठ पथ है। तुम्हें केवल गुरु के आदेश का पालन करना होगा।"

अगले सप्ताह मेरी मित्र ने मुझे शिकागो के सिद्धयोग ध्यान-केन्द्र पर सायंकालीन सत्संग में भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया। सत्संग के दौरान सभी ने 'गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय' नामसंकीर्तन गाना शुरू किया।

जैसे-जैसे नामसंकीर्तन आगे बढ़ता गया, मैंने कुछ ऐसा सुना जो वास्तव में असम्भव था। मैं मन ही मन सोचने लगा, *यह नहीं हो सकता।* ध्यान-हॉल में बैठे हुए मैंने वही सुन्दर और सुमधुर बाँसुरी-वादन सुना, *उसी* धुन में जो पन्द्रह वर्ष पूर्व, सात साल की उम्र में मैंने सुना था। पहले की ही तरह, आज भी वह धुन सभी ओर से आ रही थी। आनन्द की लहरें, एक के बाद एक, मुझे सराबोर कर रही थीं, और मैं उस मनोरम ध्वनि में निमग्न हो गया था। मेरी आँखों से आसुओं का सैलाब बहने लगा। वे सन्ताप, निराशा अथवा उत्कण्ठा के आँसू नहीं थे। वे उच्च कोटि के आनन्द व प्रेम के आँसू थे; ऐसा आनन्द व प्रेम मैंने कभी अनुभव नहीं किया। तत्क्षण, मेरे प्रश्न समाप्त हो गए क्योंकि मेरी आत्मा पुनर्मिलन के आनन्द की अनुभूति कर रही थी।

बाबा जी, आपको बहुत धन्यवाद, इस प्रेमरूपी उपहार के लिए। गुरुमाई जी, आपको बहुत धन्यवाद, इसे जीवन्त रखने के लिए।

~मिस्सौरी, अमरीका के एक सिद्धयोगी

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।